

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, पवित्र आत्मा और मसीह के साथ एकता, सत्र 7, मसीह के साथ एकता के लिए आधार , पुराना नियम, और सिनॉटिक्स

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्लेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा पवित्र आत्मा और मसीह के साथ एकता पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 7 है, मसीह के साथ एकता के लिए आधार, पुराना नियम और सिनॉटिक्स।

जैसा कि हम परमेश्वर के लोगों में शामिल होने के तहत मसीह के साथ एकता के लिए पुराने नियम के आधारों के बारे में सोचना जारी रखते हैं, हमारे पास पीड़ित सेवक पर एक छोटा सा खंड है।

जबकि दाऊद पुराने नियम में अंतिम महत्वपूर्ण वाचा मध्यस्थ है, भविष्यवक्ता एक आने वाले वाचा मध्यस्थ की भविष्यवाणी करते हैं जो एक दाऊदी राजा, यशायाह 9, 6 और 7, और एक पीड़ित सेवक भी होगा। यशायाह 9, 6, क्योंकि हमारे लिए एक बच्चा पैदा हुआ है, हमें एक बेटा दिया गया है, और सरकार उसके कंधे पर होगी, और उसका नाम अद्भुत परामर्शदाता, पराक्रमी ईश्वर, अनन्त पिता, शांति का राजकुमार कहा जाएगा। उसकी सरकार और शांति की वृद्धि का कोई अंत नहीं होगा, दाऊद के सिंहासन पर और उसके राज्य पर, इसे स्थापित करने और न्याय और धार्मिकता के साथ इसे बनाए रखने के लिए, अब से और हमेशा के लिए।

और अगर हम सोचते हैं कि यह मानवीय इच्छा या शक्ति से होने जा रहा है, तो प्रभु भविष्यवक्ता के माध्यम से कहते हैं, सेनाओं के प्रभु का जोश ऐसा करेगा। इसलिए, आने वाला वाचा मध्यस्थ एक दाऊदवंशीय राजा होगा, लेकिन एक पीड़ित सेवक भी होगा। यह सेवक राष्ट्रों के लिए एक प्रकाश होगा, जो न केवल इस्राएल बल्कि पृथ्वी के सभी लोगों का प्रतिनिधित्व करेगा, यशायाह 49 और 6 हमें बताता है।

क्या यह बहुत छोटी बात है कि तुम मेरे सेवक बनो, याकूब के गोत्रों को बढ़ाओ, और इस्राएल के रक्षित लोगों को वापस लाओ, यशायाह 49, 6? मैं तुम्हें राष्ट्रों के लिए एक ज्योति बनाऊंगा, ताकि मेरा उद्धार पृथ्वी के छोर तक पहुँच सके, जिसे ल्यूक ने प्रेरितों की पुस्तक में उद्धृत किया है क्योंकि सुसमाचार अन्यजातियों तक जाता है। इस प्रकार, वह मुझे फटकारेगा, न कि केवल क्षमा करेगा। इस प्रकार, वह अब्राहम की तरह न केवल जातीय इस्राएल का प्रतिनिधित्व करेगा, बल्कि आदम की तरह सभी लोगों का प्रतिनिधित्व करेगा। वह एक राज करने वाले राजा के रूप में नहीं आएगा, बल्कि यशायाह 53:3 और 4 होगा, कम से कम अपने पहले आगमन में।

वह लोगों द्वारा तिरस्कृत और अस्वीकार किया गया था, वह दुःखी व्यक्ति था और दुःख से परिचित था। और वह ऐसा व्यक्ति था जिससे लोग अपना चेहरा छिपाते थे, वह तिरस्कृत था, और

हमने उसका मूल्य नहीं समझा। निश्चय ही, उसने हमारे दुःखों को सहा है और हमारे दुखों को उठाया है, फिर भी हमने उसे मारा-पीटा, ईश्वर द्वारा मारा-पीटा और पीड़ित समझा।

यशायाह 53 की आयत 5 और 6 हमें बताती है कि वह हमारे अपराधों के कारण घायल हुआ, हमारे अधर्म के कारण कुचला गया। उस पर वह दण्ड पड़ा जिससे हमें शांति मिली, और उसके घावों से हम चंगे हुए। हम सब भेड़ों की तरह भटक गए थे; हम में से प्रत्येक ने अपना अपना मार्ग लिया, और यहोवा ने हम सब के अधर्म का बोझ उसी पर डाल दिया।

अपने अपमान में, सेवक एक वाचा मध्यस्थ के रूप में कार्य करता है, अपने लोगों को उनके पाप के लिए दण्ड देता है ताकि बहुत से लोग धर्मी माने जा सकें। यशायाह 53:11. प्रेरित, क्योंकि बहुत से लोग हिसाब में लिए जाएंगे, वह बहुत से लोगों को धर्मी ठहराएगा, और वह उनके अधर्म का बोझ उठाएगा।

यशायाह 53:11. प्रेरित पतरस 1 पतरस 2 पद 21 और 24 में यशायाह 53 के शब्दों में हमें उसकी पहचान बताता है। पतरस यशायाह से भविष्यवाणी को उद्धृत करता है और इसे सीधे प्रभु यीशु पर लागू करता है।

और तुम इसी के लिये बुलाए भी गए हो, क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिये दुख उठाकर तुम्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके पदचिन्हों पर चलो। वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया कि हम पाप के लिये मरकर धार्मिकता के लिये जीवन बिताएं। 22 उसने कोई पाप न किया, और न उसके मुंह से कोई छल की बात निकली, यह यशायाह 53 से एक उद्धरण है।

हमने पुराने नियम में मसीह के साथ एकता की नींव के तीन बड़े चित्र बताए हैं। पहला चित्र पहचान का था। परमेश्वर की उपस्थिति उसके लोगों को पहचान देती है।

वे उसके लोग हैं, और वह उनका परमेश्वर है। दूसरा है समावेश। वे वाचा के लोग बन गए, एक सामूहिक वाचा के लोग।

तीसरा है भागीदारी। परमेश्वर के पुराने नियम के लोग वाचा की कहानी में हिस्सा लेते हैं। हम मसीह के साथ उसके शरीर के सदस्यों के रूप में जुड़े हुए हैं और अंतिम वाचा मध्यस्थ के रूप में उसमें शामिल हैं।

हम भी यीशु और उसकी कहानी में भाग लेते हैं। हम उसके साथ मरे, हम उसके साथ जी उठे, कुलुस्सियों 2:20, कुलुस्सियों 3:1, और उसके साथ बैठे, इफिसियों 2:6। पुराने नियम में इन शब्दों में बात नहीं की गई है, लेकिन इसमें परमेश्वर की कहानी में भागीदारी की एक समान अवधारणा है जब परमेश्वर अपने लोगों को अपनी कहानी में शामिल करता है। जबकि यह विचार नए नियम में अधिक स्पष्ट हो जाता है, पुराने नियम में परमेश्वर के लोगों को ऐसे लोगों के रूप में देखा जाता है जो वाचाओं के माध्यम से उसके साथ संबंध में रहकर परमेश्वर द्वारा लिखी गई कथा में भाग लेते हैं।

सहभागिता का यह सिद्धांत उन अवधारणाओं से संबंधित है जिनका हम पहले ही अध्ययन कर चुके हैं। जब परमेश्वर की वाचागत उपस्थिति उसके लोगों को बनाती है और उसके लोगों को एक पहचान देती है, तो वे उसकी उपस्थिति का अनुभव करते हैं और इस प्रकार उसकी कहानी में भाग लेते हैं। इसलिए, उदाहरण के लिए, जब परमेश्वर अब्राहम और उसके वंश के साथ वाचा बाँधता है, तो वह उन्हें अपने लोगों में शामिल कर लेता है, और अब्राहम, इसहाक और याकूब परमेश्वर को जानते हैं और उससे प्रेम करते हैं क्योंकि वे विश्वास और आज्ञाकारिता में उसके साथ चलते हैं।

एक अर्थ में, पुराने नियम के संत परमेश्वर की उपस्थिति का अनुभव करते हैं और उसके लोगों के होते हैं, क्योंकि नए नियम के संत मसीह के साथ एकता का पूर्वानुभव प्राप्त करते हैं। और भी बहुत कुछ है। पुराने नियम में ऐसे अंश भी हैं जिनमें परमेश्वर अपने लोगों के भीतर अपनी आत्मा डालने का वादा करता है।

हम उनमें से दो पर विचार करेंगे। यहजकेल 36:24 से 28। यह अनुच्छेद इन शब्दों का उपयोग किए बिना भी एक नई वाचा का अनुच्छेद है, लेकिन व्यक्त किए गए विचारों के आधार पर यह एक नए नियम की वाचा का अनुच्छेद है।

यहजकेल 36:24 से 28. मैं तुम को जातियों में से ले लूंगा, और देश देश के लोगों में से इकट्ठा करूंगा, और तुम्हारे निज देश में पहुंचाऊंगा। और तुम पर शुद्ध जल छिड़कूंगा, और तुम अपनी सारी अशुद्धता और मूरतों से शुद्ध हो जाओगे।

मैं तुम्हें शुद्ध करूंगा, और मैं तुम्हें एक नया हृदय दूंगा और एक नई आत्मा तुम्हारे भीतर डालूंगा, और मैं तुम्हारे शरीर से पत्थर का हृदय निकाल दूंगा और तुम्हें मांस का हृदय दूंगा और मैं अपनी आत्मा तुम्हारे भीतर डालूंगा और तुम्हें मेरी विधियों पर चलने और मेरे नियमों का पालन करने में सावधान रहने के लिए प्रेरित करूंगा। तुम उस देश में बसोगे जो मैं तुम्हारे पूर्वजों को देता हूँ, और तुम मेरे लोग होगे, और मैं तुम्हारा परमेश्वर होऊँगा। यहाँ, परमेश्वर बिखरे हुए इस्राएल को उसकी भूमि पर वापस लाने का वादा करता है।

क्यों? अपनी पवित्र प्रतिष्ठा को सही साबित करने और आस-पास के देशों को यह दिखाने के लिए कि वह प्रभु है। यहजकेल 36:22, 23 और यहाँ तक कि 36, जिसे हमने नहीं पढ़ा। वह इससे भी ज्यादा करेगा।

वह न केवल उन्हें पुनः इकट्ठा करेगा, बल्कि उन्हें उनके पापों से भी शुद्ध करेगा। श्लोक 25, 29, 33.

वह तुम्हें नया हृदय और आत्मा देकर ऐसा करेगा। यहजकेल के शब्द नए नियम के पद 26 में पुनर्जन्म के सिद्धांत के लगभग समान हैं। मैं तुम्हें नया हृदय दूंगा और तुम्हारे भीतर नई आत्मा डालूंगा।

मैं तुम्हारे शरीर से पत्थर का हृदय निकालकर तुम्हें मांस का हृदय दूंगा। इसका परिणाम यह होगा कि तुम प्रभु के प्रति पुनः आज्ञाकारी बनोगे - श्लोक 27।

यह परमेश्वर के अपने लोगों में सामूहिक रूप से निवास करने के लिए पुराने नियम की एक महत्वपूर्ण पृष्ठभूमि है। मसीह के साथ एकता से जुड़ा एक नया नियम विषय। यहजकेल 37:11 से 14।

तब यहोवा ने यहजकेल से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, ये हड्डियाँ इस्राएल के सारे घराने की हैं। वे कहते हैं, हमारी हड्डियाँ सूख गई हैं, और हमारी आशा जाती रही है। हम सचमुच नाश हो गए हैं।

इसलिए, भविष्यवाणी करके उनसे कहो, प्रभु यहोवा यों कहता है। देखो, हे मेरे लोगों, मैं तुम्हारी कब्रें खोलकर तुम्हें कब्रों से निकालूंगा। और मैं तुम्हें इस्राएल के देश में ले आऊंगा।

और जब मैं तुम्हारी कब्रें खोलकर तुम्हें कब्रों से निकालूंगा, तब तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूँ, हे मेरे लोगों। और मैं अपना आत्मा तुम्हारे भीतर डालूंगा, और तुम जीओगे, और मैं तुम्हें तुम्हारे अपने देश में बसाऊंगा। तब तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूँ।

यहोवा की यह वाणी है, मैंने यह कहा है और मैं इसे पूरा भी करूँगा। यहजकेल 37 पिछले अध्याय में शुरू हुए विषय को जारी रखता है। यहजकेल बताता है कि परमेश्वर की अलौकिक जीवन देने वाली शक्ति से कैसे चीज़ें घटित होंगी।

यहजकेल सूखी हड्डियों की एक घाटी देखता है और परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हुए, उनके लिए भविष्यवाणी करता है। भविष्यवक्ता के वचन पर, हड्डियाँ खड़खड़ाने लगती हैं और एक साथ आ जाती हैं और नसों और मांस से ढक जाती हैं। फिर, यहजकेल के वचन पर, लाशों में साँस आ जाती है, और वे जीवित हो जाते हैं और खड़े हो जाते हैं, जिससे एक बड़ी सेना बन जाती है।

पद 1 से 10. यह परमेश्वर द्वारा अपने बिखरे हुए लोगों को पुनः बनाने और उन्हें उनके देश में वापस लाने का चित्रण करता है। पद 12 और 14.

एक बार फिर, यहजकेल के शब्द नये नियम की शिक्षा को चित्रित करते हैं - श्लोक 14. मैं अपनी आत्मा तुम्हारे भीतर डालूंगा।

तुम जीवित रहोगे। तुम जानोगे कि मैं प्रभु हूँ। मैंने कहा है।

मैं यह करूँगा। परमेश्वर मरे हुए बिखरे हुए इस्राएल को अपनी आत्मा देकर और उनके भीतर डालकर जीवित करेगा। पित्तुकुस्त के दिन, परमेश्वर अपने पवित्र आत्मा को उनके भीतर डालकर अपने नए नियम के संतों को जीवित करता है।

हम मसीह के साथ एकता के नए नियम के सिद्धांत के लिए पुराने नियम की नींव के अंत तक पहुँच गए हैं। अब निष्कर्ष निकालने का समय आ गया है। यह कहना कालभ्रमित करने वाला है कि पुराना नियम मसीह के साथ एकता सिखाता है।

इसके बजाय, यह इसका पूर्वाभास देता है। पहला है पहचान। परमेश्वर अपनी वाचा की उपस्थिति के माध्यम से पुराने नियम में अपने लोगों के साथ पहचान करता है।

ऐसा करके, वह उन्हें एक पहचान प्रदान करता है। वह उनका परमेश्वर है, और वे उसके लोग हैं। यह पहचान नए करार में मसीह के साथ एकता को दर्शाती है, जो परमेश्वर की वाचा की उपस्थिति के रूप में सर्वोत्कृष्ट है।

यह नए नियम के संतों की पहचान को भी दर्शाता है जो मसीह में हैं। दूसरा, समावेश। परमेश्वर चुने हुए लोगों को वाचा के लोगों में शामिल करता है।

वे वाचा के मध्यस्थ के माध्यम से परमेश्वर से संबंध रखते हैं। पुराने नियम में, इनमें आदम, नूह, अब्राहम, मूसा और दाऊद शामिल हैं। हालाँकि, वाचा का मध्यस्थ सर्वोत्कृष्ट रूप में एक ऐसे व्यक्ति के रूप में आता है जो दाऊद का राजा और पीड़ित सेवक, यीशु मसीह दोनों हैं।

अपनी मृत्यु में मध्यस्थता के द्वारा, वह अपने लोगों के पापों के लिए प्रायश्चित्त करता है और अपने पुनरुत्थान में, उन्हें परमेश्वर के लिए जीवित करता है। वह दूसरी बार कष्ट सहने के लिए नहीं बल्कि दाऊद के पुत्र के रूप में श्रेष्ठतापूर्वक शासन करने के लिए आएगा। तीसरा, भागीदारी।

परमेश्वर के लोग वाचा की कहानी में भाग लेते हैं। नए नियम में चर्च जिस तरह से है, उसका पूर्वाभास देते हुए, वे यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान में भाग लेंगे। यह तब होगा जब पवित्र आत्मा के बारे में पुराने नियम की भविष्यवाणियाँ यीशु और उसकी सेवकाई में पूरी होंगी, जिसमें पिनतेकुस्त भी शामिल है।

अंततः, पुराना नियम मसीह के साथ एकता की नई नियम की शिक्षा को समझने की नींव रखता है। समकालिक सुसमाचारों में मसीह के साथ एकता की नींव। फिर से, मैं अपने पूर्व शिक्षण सहायक, काइल कीटिंग को बहुत अच्छे शोध और यहां तक कि लेखन के लिए श्रेय देता हूं।

समकालिक सुसमाचार हमें नासरत के यीशु से परिचित कराते हैं। नासरत। वे सभी गवाही देते हैं कि यीशु परमेश्वर का मसीह है, मसीहा जो इस्राएल को बचाएगा और राष्ट्रों के लिए एक प्रकाश बनेगा।

लूका 2:32 से तुलना करें। यदि पुराना नियम मसीह के साथ मिलन का पूर्वाभास देता है, तो समकालिक सुसमाचार नए नियम में मसीह के साथ मिलन की तलाश शुरू करने के लिए एक उचित स्थान है, क्योंकि वे यीशु की कहानी बताते हैं। हालाँकि, समकालिक सुसमाचारों में मसीह के साथ मिलन के कुछ ही संदर्भ हैं।

क्यों? सबसे पहले, सुसमाचार यीशु की कहानी बताने पर ज़्यादा ध्यान देते हैं, बजाय इसके निहितार्थों को उपदेशात्मक शिक्षा के रूप में समझाने की कोशिश करने के। जहाँ सिद्धांत प्रकट होते हैं, वे अक्सर सिद्धांतों के बजाय कहानी के हिस्से के रूप में अप्रत्यक्ष रूप से ऐसा करते हैं। दूसरा, समकालिक सुसमाचारों के छुटकारे-ऐतिहासिक संदर्भ का अर्थ है कि उनके अधिकांश आख्यान मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान से पहले के हैं।

यदि मसीह के साथ मिलन मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान में निहित एक सिद्धांत है, तो उन घटनाओं के घटित होने से पहले एक पूर्ण स्पष्टीकरण की अपेक्षा करना असामान्य होगा। हालाँकि, ये दोनों व्याख्याएँ यूहन्ना के सुसमाचार के लिए भी सही हैं, जिसमें सिनॉटिक्स की तुलना में मिलन के कई और संदर्भ हैं। क्यों? यूहन्ना के सभी ग्रंथ जो स्पष्ट रूप से मसीह के साथ मिलन का उल्लेख करते हैं, वे उसके लिए अद्वितीय हैं और अद्वितीय स्रोतों से लिए गए प्रतीत होते हैं।

इसके अलावा, सिनॉटिक गॉस्पेल और जॉन के बीच विषयगत अंतर एक अलग फोकस का सुझाव देते हैं। जबकि जॉन यीशु और पिता और यीशु और उसके लोगों के बीच के रिश्ते पर ध्यान केंद्रित करता है, सिनॉटिक्स यहाँ अन्य विषयों जैसे कि ईश्वर के राज्य या यीशु द्वारा पुराने नियम की पूर्ति पर ध्यान केंद्रित करने में कम समय व्यतीत करते हैं। तो, सिनॉटिक्स मसीह के साथ एकता के बारे में क्या कहते हैं? वे उस वास्तविक स्थापना की ओर इशारा करते हैं जिसके लिए विश्वासी एकजुट होते हैं।

जब हम कहते हैं कि विश्वासी मसीह से जुड़े हुए हैं, तो अंतर्निहित प्रश्न यह है कि यह मसीह कौन है? सिनॉटिक्स इस प्रश्न का उत्तर देते हुए यीशु की पहचान और मिशन प्रस्तुत करते हैं। सिनॉटिक्स फिर मसीह के साथ एकता के लिए धार्मिक आधार स्थापित करते हैं। इसके अलावा, वे एकता के लिए वास्तविक मुक्तिदायक ऐतिहासिक आधार स्थापित करते हैं।

वे हमें मसीह के उद्धारक कार्य को दिखाते हैं जो उसके साथ एकता में हम पर लागू होता है। एकता उन्हीं तीन अवधारणाओं के माध्यम से स्थापित होती है जिन्हें हमने पुराने नियम में देखा था - यीशु में इममानुएल और दूल्हे के रूप में पहचान।

यीशु के माध्यम से वाचा मध्यस्थ के रूप में समावेशन सर्वोत्कृष्ट है। यीशु की कहानी में भागीदारी। हम एक-एक करके उन पर चर्चा करने से पहले मैं उन्हें दोहराऊँगा।

यीशु में इममानुएल और दूल्हे के रूप में पहचान। वाचा के मध्यस्थ के रूप में यीशु के माध्यम से समावेशन। और तीन, यीशु की कहानी में भागीदारी।

यीशु को इममानुएल और दूल्हे के रूप में पहचानना। यीशु को इममानुएल के रूप में। जब वे यीशु को इममानुएल के रूप में प्रस्तुत करते हैं, तो सिनॉटिक्स पहचान के संदर्भ में मसीह के साथ एकता का संकेत देते हैं।

पुराने नियम में, हमने देखा कि परमेश्वर अपने लोगों के साथ अपनी वाचागत उपस्थिति के माध्यम से उनकी पहचान करता है। हम मत्ती के सुसमाचार में भी परमेश्वर की उपस्थिति के माध्यम से पहचान के इस विषय को पाते हैं। मत्ती यशायाह 7:14 का हवाला देते हुए इसे यीशु के जन्म पर लागू करता है।

जब यूसुफ को पता चलता है कि मरियम गर्भवती है तो वह हैरान हो जाता है और चुपचाप उसे तलाक देने के बारे में सोचता है, लेकिन तभी एक स्वर्गदूत उसके लिए स्वागत संदेश लेकर आता

है। यूसुफ, तुम उससे शादी करने के लिए स्वतंत्र हो। जो कुछ उसके गर्भ में है वह पवित्र आत्मा से है, मत्ती 1:20 से 23।

और तुम उसका नाम इममानुएल रखना, जिसका अर्थ है परमेश्वर हमारे साथ। मत्ती यीशु को अपने लोगों के साथ परमेश्वर की उपस्थिति के रूप में प्रस्तुत करता है। मत्ती ने दो बार और ऐसा ही किया।

मत्ती 18:19 से 20 में यीशु कहते हैं, जाओ और सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ, उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी हैं, मानना सिखाओ। और देखो, मैं सदैव तुम्हारे साथ हूँ। युग के अंत तक, मत्ती 28:19 और 20।

चार्ल्स काल्स, काल्स, चार्ल्स काल्स एक महत्वपूर्ण निहितार्थ निकालता है। मैथ्यू 1:23, इममानुएल कथन, और मैथ्यू 28:20 पूरे सुसमाचार को ब्रैकेट में रखने का काम करते हैं। यह वादा कि सुसमाचार की शुरुआत में यीशु हमारे साथ है, अंततः यीशु के आश्वासन में पूरा होता है, मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ, युग के अंत तक, सुसमाचार के अंत में।

चार्ल्स एल. काल्स, मैथ्यू का धर्मशास्त्र, यीशु ने एक उद्धारकर्ता, राजा और अवतार निर्माता के रूप में प्रकट किया। अपने लोगों के बीच यीशु की उपस्थिति के ये दो वादे एक तीसरे वादे को शामिल करते हैं। उद्धारण, जहाँ दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे होते हैं, वहाँ मैं उनके बीच में हूँ।

करीबी उद्धारण, मैथ्यू 18:20। फिर से, काल्स बताते हैं, "इस प्रकार मैथ्यू 18:20 एक त्रिमूर्ति का तत्व है, जो यीशु के व्यक्तित्व में अपने लोगों के साथ परमेश्वर की उपस्थिति की पुष्टि करता है।"

परमेश्वर यीशु के व्यक्तित्व में अपने लोगों से मिलने के द्वारा उनके साथ अपनी पहचान बनाता है, इस प्रकार मसीह और उसकी आत्मा के साथ एकता की आशा करता है। यीशु दूल्हे के रूप में। मैथ्यू और मार्क के एक अन्य विवरण में विवाह के प्रतीक का उपयोग यह दिखाने के लिए किया गया है कि यीशु अपने लोगों के साथ कैसे अपनी पहचान बनाता है।

मत्ती 9:14 और 15 पढ़ने लायक है। तब यूहन्ना के चेले यीशु के पास आए और पूछा कि हम और फरीसी उपवास क्यों करते हैं, लेकिन तुम्हारे चेले उपवास नहीं करते? और यीशु ने उनसे कहा, क्या शादी के मेहमान तब तक शोक मना सकते हैं जब तक दूल्हा उनके साथ है? ऐसे दिन आएंगे जब दूल्हा उनसे अलग हो जाएगा, और तब वे उपवास करेंगे। यीशु ने उनके बीच अपनी उपस्थिति के निहितार्थ को दिखाने के लिए शादी की कल्पना का उपयोग किया।

मैथ्यू पर डीए कार्सन की टिप्पणी सुनें। "यीशु का उत्तर स्पष्ट रूप से मसीह-संबंधी था। वह स्वयं मसीहाई दूल्हा है।" लेकिन अगर यीशु दूल्हा है, तो दुल्हन कौन है? पुराने नियम की कल्पना में, दूल्हा यहोवा और उसके लोग, इस्राएल दुल्हन है। यशायाह 62:5, होशे 2:19 और 20 की तुलना करें।

यशायाह 62:5, होशे 2:19 और 20. इसी तरह, यीशु खुद को दूल्हा और अपने लोगों, चर्च को अपनी दुल्हन के रूप में पेश करता है। पौलुस ने भी वही वैवाहिक चित्रण किया है, जिसे हम

इफिसियों 5:25, 27, 1 कुरिन्थियों 6:15 से 20, 2 कुरिन्थियों 11:1 से 5 में देखेंगे। ये इफिसियों 5:25, 27, 1 कुरिन्थियों 6:15 से 20, 2 कुरिन्थियों 11:1 से 5 हैं। जबकि इस चित्रण का कार्यान्वयन पौलुस का काम है, यीशु के शब्द इसकी नींव रखते हैं।

यीशु दूल्हा है, और चर्च उसकी दुल्हन है। वह अपने लोगों के साथ उसी तरह से जुड़ता है जैसे दूल्हा अपनी दुल्हन के साथ अपनी शादी के दिन खुद को जोड़ता है। वाचा के मध्यस्थ के रूप में यीशु के माध्यम से समावेशन सर्वोत्कृष्ट है।

इसलिए, हम पहचान के विषय को देखते हैं, यीशु अपने लोगों के साथ उपस्थित होते हैं और अपने निहित लोगों, अपने लोगों, चर्च के साथ दूल्हा बनकर उपस्थित होते हैं; उनके साथ उनकी उपस्थिति उन्हें परमेश्वर के लोगों के रूप में पहचानती है। अब, समावेशन उस सांप्रदायिक लहजे को लाता है जिसे हमने पुराने नियम में देखा था। वाचा के मध्यस्थ के रूप में यीशु के माध्यम से समावेशन सर्वोत्कृष्ट है।

सिनॉटिक्स यीशु को परम वाचा मध्यस्थ, परमेश्वर के लोगों के परम प्रतिनिधि के रूप में चित्रित करते हैं। हमने पुराने नियम में वाचा मध्यस्थों को शामिल होते देखा। सिनॉटिक्स यीशु को नए और महान इस्राएल के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

रूपांतरण के समय, जब पतरस ने सुझाव दिया कि वह, याकूब और यूहन्ना अपने मेहमानों, मूसा, एलिय्याह और यीशु के लिए तीन तंबू बनाएँ, तो परमेश्वर बीच में बोल पड़ते हैं। लूका 9:34, 35. सचमुच, वह बीच में बोल पड़ते हैं।

पीटर, तुम फिर से गलत धारणा दे रहे हो। मास्टर, हमारे लिए यहाँ तीन टेंट बनाना अच्छा है। ओह बाँय।

एक तुम्हारे लिए, एक मूसा के लिए, एक एलिय्याह के लिए। लूका ने यह नहीं जानते हुए कि उसने क्या कहा, आगे कहा। जब वह ये बातें कह रहा था, लूका 9:34.

एक बादल आया और उन पर छा गया, वह ईश्वरीय उपस्थिति का बादल था, और वे बादल में प्रवेश करते ही डर गए। और बादल में से एक आवाज़ आई, यह मेरा बेटा है, मेरा चुना हुआ। इसकी बात सुनो।

और जब आवाज़ बोल चुकी, तो यीशु अकेले पाए गए। यह पिता की आवाज़ है जो यीशु की पहचान बताती है। वह परमेश्वर का अपना पुत्र है, चुना हुआ।

मूसा और एलिय्याह, जो कानून और भविष्यद्वक्ताओं के उद्घरण का प्रतिनिधित्व करते हैं, ने उसके प्रस्थान के बारे में बात की, जिसे वह यरूशलेम में पूरा करने वाला था, श्लोक 31। यह एक दिलचस्प संदर्भ है। मैंने पिछले व्याख्यान में इसका उल्लेख किया था।

आप एक शब्द का दो तरह से अनुवाद नहीं कर सकते। प्रस्थान शब्द का शाब्दिक अर्थ है पलायन। यह यीशु का इस दुनिया से जाना, उनकी मृत्यु है।

लेकिन इस दुनिया से उनका जाना और क्रूस पर चढ़ना ही उनका पलायन है। यही वह प्रतिरूप है जिसके लिए पुराने नियम की मिस्र की दासता से मिस्र के महान उद्धार की घटना वह प्रतिरूप थी जो उस महान छुटकारे की ओर इशारा करती थी जिसे मसीह अकेले ही अपने लोगों के लिए एक बार और हमेशा के लिए पूरा करेंगे। पिता ने स्वर्ग से कहा, परमेश्वर का पुत्र, यह मेरा पुत्र है, ये शब्द यीशु को पुराने नियम के इस्राएल के परमेश्वर के पुत्र होने के समान तरीके से चित्रित करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे यीशु, इस्राएल के प्रतिनिधि के रूप में, मसीहा हैं।

दूसरा शीर्षक, वह मेरा बेटा है, मेरा चुना हुआ, इस निष्कर्ष की पुष्टि करता है। जिस तरह से इस्राएल परमेश्वर के चुने हुए लोग हैं, उसी तरह यीशु परमेश्वर के चुने हुए लोग हैं, मसीहा, जो एकमात्र पूर्णतः वफ़ादार इस्राएली के रूप में इस्राएल का प्रतिनिधित्व करेंगे। डेरेल बॉक ने सारगर्भित कहा है।

"जब कोई दो उपाधियों को एक साथ रखता है, भगवान का बेटा, चुना हुआ, यीशु को मसीहाई सेवक के रूप में पहचाना जाता है," डेरेल बॉक, बेकर की न्यू टेस्टामेंट, ल्यूक, खंड एक पर व्याख्यात्मक टिप्पणी। मसीहा के रूप में, यीशु वाचा के मध्यस्थ के रूप में उत्कृष्ट है।

वह परम वाचा मध्यस्थ है जो अनंत काल तक परमेश्वर के लोगों के प्रतिनिधि के रूप में खड़ा है। शुरुआत में एक पीढ़ी के माध्यम से, अपने सुसमाचार की शुरुआत में एक वंशावली के माध्यम से, मैथ्यू यीशु को दाऊद और अब्राहम से जोड़ता है, जैसा कि हमने देखा है, मैथ्यू एक, एक से 17 तक। दाऊद और अब्राहम दोनों पुराने नियम की वाचा के मध्यस्थ थे।

मैथ्यू की वंशावली से पता चलता है कि यीशु अब्राहम और दाऊद की तरह ही एक वाचा मध्यस्थ है, फिर भी वह उनसे बड़ा है। कार्ल्स मैथ्यू एक, एक को सारांशित करते हैं, "यीशु मसीह, दाऊद का पुत्र, अब्राहम का पुत्र। यीशु नया दाऊद है, हमारा राजा। वह दाऊद के साथ परमेश्वर की वाचा की पूर्ति है। यीशु नया अब्राहम है, हमारा संस्थापक। वह यहूदियों और गैर-यहूदियों दोनों से मिलकर बने एक नए चुने हुए लोगों को बनाकर अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा को पूरा करता है जो परमेश्वर के पवित्र होने के समान पवित्र होंगे और जो राष्ट्रों के लिए एक प्रकाश के रूप में सेवा करेंगे।"

यीशु न केवल वाचा का मध्यस्थ है, बल्कि वह यिर्मयाह 31 और जैसा कि हमने देखा, यहजकेल 36 और 37 जैसे पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं द्वारा भविष्यवाणी की गई नई वाचा का मध्यस्थ है। अंतिम भोज के दौरान, यीशु ने रोटी तोड़ते हुए कहा, यह प्याला मेरे लहू में नई वाचा है, लूका 22:19 और 20। यीशु अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के साथ नई वाचा का उद्घाटन करते हैं, जिसे प्रभु के भोज में मुहरबंद और मनाया जाता है।

तीनों समकालिक सुसमाचार यीशु की मसीहाई साख को स्थापित करते हैं। उनमें से प्रत्येक के अंत में कोई संदेह नहीं है कि यीशु पिछले वाचा मध्यस्थों, आदम, नूह, अब्राहम, मूसा और दाऊद के बाद मसीहा हैं, लेकिन उन सभी से भी महान हैं। यीशु की मसीहा के रूप में इस पहचान में यह वास्तविकता निहित है कि एक वाचा मध्यस्थ के रूप में, वह परमेश्वर के लोगों का प्रतिनिधित्व करता है।

सिनॉटिक्स मसीह के साथ एकता के लिए एक आधार प्रदान करते हैं जब वे यीशु को वाचा के मध्यस्थ के रूप में स्थापित करते हैं जिसके साथ परमेश्वर के लोग जुड़े हुए हैं और जिसके द्वारा उनका प्रतिनिधित्व किया जाता है। इसलिए, पुराने नियम की तरह, हम सिनॉटिक सुसमाचारों में भी देखते हैं। सबसे पहले, पहचान का विषय।

यीशु अपने लोगों को परमेश्वर के लोगों के रूप में खुद के साथ पहचानता है, और फिर यीशु के अपने बारे में और वाचा मध्यस्थ और पीड़ित सेवक के रूप में अपनी भूमिकाओं के बारे में शब्दों में निहित समावेश के साथ, वह अपने लोगों को परमेश्वर के लोगों के रूप में व्यक्तिगत रूप से शामिल करता है, बेशक, लेकिन एक निकाय के रूप में भी, अपने शरीर, चर्च के रूप में, जैसा कि पॉल स्पष्ट रूप से बताएगा। तीसरा, यीशु की कहानी में भागीदारी। हमारा तीसरा पुराना नियम विषय समकालिक सुसमाचारों में गूंजता है।

समकालिक सुसमाचार यीशु की कहानी का विशद वर्णन करते हैं, उनके अवतार से लेकर उनके पुनरुत्थान तक। मसीह के साथ एकता के संबंध में भागीदारी की भाषा का अर्थ है कि हम उनकी कहानी में भागीदार हैं। यानी, हम उन घटनाओं में भाग लेते हैं जो धरती पर यीशु के जीवन की कहानी को आकार देती हैं।

इस प्रकार, जैसा कि सिनॉटिक्स यीशु की कहानी को दर्शाते हैं, वे हमें वह कहानी दिखाते हैं जिसमें हम भी भाग लेते हैं। सिनॉटिक्स यीशु की कहानी को इस संदर्भ में बताते हैं कि उन्होंने इतिहास में क्या हासिल किया। यदि भागीदारी उनके द्वारा किए गए कार्य में भागीदारी सुनिश्चित करती है, तो वह कार्य क्या है? सिनॉटिक्स यीशु के कुंवारी गर्भाधान और अवतार को प्रस्तुत करते हैं।

मत्ती 1:18-25. लूका 1:26-38. लूका 2:6-7.

मुझे नहीं लगता कि हमने वह पढ़ा है। और जब वे बेथलेहम में थे, तो मरियम के बच्चे को जन्म देने का समय आ गया। और उसने अपने जेठे बेटे को जन्म दिया और उसे कपड़े में लपेटकर चरनी में लिटा दिया क्योंकि सराय में उनके लिए जगह नहीं थी।

मैथ्यू कहते हैं कि इसका नाम रखा गया है, और यूसुफ और मरियम दोनों को उसका नाम यीशु रखने के लिए कहा गया, जिसका अर्थ है उद्धारकर्ता या प्रभु बचाता है क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापों से बचाएगा। ईश्वर का शाश्वत पुत्र नासरत के यीशु में एक मानव बन गया। ईसाई परंपरा ने अपने शुरुआती दिनों से ही समझ लिया है कि यीशु का अवतार अद्वितीय है, लेकिन मानव और दिव्य के बीच एक तरह का मिलन स्थापित करता है।

धर्मशास्त्री यीशु के दिव्य और मानवीय स्वभाव के बीच के संबंध का वर्णन करने के लिए हाइपोस्टेटिक या व्यक्तिगत एकता शब्द का उपयोग करते हैं। दिव्य पुत्र ने अपने लिए एक मानवीय स्वभाव ग्रहण किया। अब से वह दो स्वभावों वाला एक व्यक्ति है, एक दिव्य और एक मानवीय।

दोनों स्वभाव उसके व्यक्तित्व में एक हो जाते हैं, और इस प्रकार, उनका मिलन एक व्यक्तिगत या हाइपोस्टेटिक मिलन है। परमेश्वर के लोगों का मसीह के साथ मिलन इस अद्वितीय हाइपोस्टेटिक मिलन के समान नहीं है। हम ईश्वर-पुरुष नहीं हैं, लेकिन हाइपोस्टेटिक मिलन यह देखने का मार्ग प्रशस्त करता है कि कैसे देवता मानवता के प्रति समर्पित हो सकते हैं और दोनों के बीच एक मिलन स्थापित कर सकते हैं।

परमेश्वर के पुत्र का अद्वितीय अवतार हमारे उद्धार में उसके साथ मिलन का आधार है। वह, शाश्वत पुत्र, ने अपने लिए एक मनुष्य नहीं बल्कि वर्जिन मैरी के गर्भ में एक मानवीय स्वभाव को अपनाया। वह उसकी माँ थी और उसने उसके लिए वही योगदान दिया जो हर माँ अपने बेटे के लिए देती है: डीएनए और गुणसूत्र।

इस प्रकार वह उसके ज्येष्ठ पुत्र के रूप में पैदा हुआ, लेकिन वह हमेशा से परमेश्वर का शाश्वत पुत्र था। अवतार कहता है कि शाश्वत पुत्र एक मानव प्राणी बन गया, किसी मौजूदा मानव को अपनाकर नहीं, बल्कि मरियम के गर्भ में एक मानवीय स्वभाव लेकर और एक ही व्यक्ति में परमेश्वर और मनुष्य के रूप में जन्म लेकर। वह अवतार उसके साथ हमारे मिलन को संभव बनाता है।

सिनोंट्रिक्स अवतार का परिचय देते हैं लेकिन यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान पर ध्यान केंद्रित करते हैं। यह ऐसी घटनाएँ हैं जिनके बारे में पॉल अक्सर कहते हैं कि ईसाई एकजुट हैं। मैथ्यू, मार्क और ल्यूक वह कहानी बताते हैं जिसमें पॉल के पत्रों में कहा गया है कि विश्वासी भाग लेते हैं।

सिनोंट्रिक गॉस्पेल के लिए निष्कर्ष। सिनोंट्रिक गॉस्पेल में मसीह के साथ एकता के इस संक्षिप्त सर्वेक्षण से पता चलता है कि एक सिद्धांत, एक औपचारिक शिक्षा के रूप में एकता मौजूद नहीं है। इसके बजाय, हम एक मुक्ति-ऐतिहासिक अर्थ में प्रस्तुत एकता की तस्वीर पाते हैं।

सिनोंट्रिक्स उस व्यक्ति की पहचान को प्रकट करते हैं जिसके साथ विश्वासी उद्धार में एकजुट होते हैं। पहले तीन सुसमाचार उन घटनाओं का वर्णन करते हैं जिनके बारे में पॉल बाद में हमें बताएगा कि वे इसमें भाग लेते हैं। सिनोंट्रिक्स यीशु को इममानुएल के रूप में चित्रित करते हैं, हमारे साथ ईश्वर, अपने लोगों के साथ ईश्वर के अंतिम निवास का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो अपने पाप रहित जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण और दूसरे आगमन के आधार पर अपने लोगों के साथ ईश्वर के अंतिम ब्रह्मांडीय निवास की शुरुआत करेंगे क्योंकि नया यरूशलेम स्वर्ग से पृथ्वी पर उतरेगा और फिर स्वर्ग और पृथ्वी एक हो जाएंगे।

यह केवल यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के कारण ही संभव है, और वे केवल उसके अवतार के कारण ही संभव हैं, जो उसके प्रायश्चित और विजयी कार्य की अनिवार्य शर्त है, साथ ही उसका पाप रहित जीवन भी। सिनोंट्रिक्स यीशु को इममानुएल के रूप में चित्रित करते हैं और प्रतीकात्मक रूप से उसे दूल्हे के रूप में पेश करते हैं, जो उनके साथ उनकी उपस्थिति के माध्यम से उनके लोगों के साथ उनकी पहचान को दर्शाता है। शिष्य, मेरे शिष्य, जब तक दूल्हा उनके साथ है, तब तक उपवास नहीं कर सकते।

एक समय ऐसा आएगा जब दूल्हा उन्हें छोड़ देगा, और तब वे उपवास करेंगे। अरे हाँ, और दूल्हा उन्हें अकेला नहीं छोड़ेगा, बल्कि वह पवित्र आत्मा भेजेगा, जो अन्य बातों के अलावा, उन्हें व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से उद्धार में मसीह के साथ औपचारिक रूप से एकजुट करेगा। सिनॉट्रिक्स यीशु को सभी वाचा मध्यस्थों से परे वाचा मध्यस्थ के रूप में वर्णित करता है, वाचा मध्यस्थ सर्वोत्कृष्ट, जो विश्वासियों को एक नई वाचा समुदाय, ईसाई चर्च में शामिल करेगा।

अंत में, वे यीशु की कहानी बताते हैं और विश्वासियों को उनके पीछे चलने, शिष्यों के रूप में उनकी कहानी में भाग लेने के लिए कहते हैं। सुसमाचार के अंत तक, मसीह के साथ मिलन के लिए आधारभूत घटनाएँ स्थापित हो चुकी हैं। मसीह के साथ मिलन की नींव को खोलने में परमेश्वर का अगला कदम चर्च के जीवन में उस मिलन को लागू करना है।

यह वही है जिसकी ओर हम अब प्रेरितों के काम की पुस्तक में मुड़ते हैं। प्रेरितों के काम में मसीह के साथ एकता की नींव। एक बार फिर, काइल कीटिंग इस अच्छी सामग्री के लिए मेरे साथी, कार्यकर्ता और सहायक थे।

एकता की शुरुआत पॉल से नहीं होती। हम पुराने नियम, समकालिक सुसमाचार और अब प्रेरितों के काम में मसीह के साथ एकता की नींव देखते हैं। ल्यूक के सुसमाचार और प्रेरितों के काम दोनों में उद्धार पर जोर दिए जाने के बावजूद, उद्धार के तरीके के बजाय उद्धार के क्या होने पर जोर दिया जाता है।

प्रेरितों के काम कथात्मक और भाषण-चालित हैं और सीधे उपदेशात्मक शिक्षा नहीं हैं जैसे कि पत्रियाँ। इस प्रकार, यह पूछना कि क्या यह किसी दिए गए सिद्धांत को सिखाता है, पाठ के इरादे को गलत समझना है। निस्संदेह, सभी शास्त्र परमेश्वर के लोगों को सिखाने के लिए हैं, लेकिन हमें प्रेरितों के काम की शैली, शैली को ध्यान में रखना चाहिए, यह मूल्यांकन करने में कि क्या लूका मसीह के साथ एकता के सिद्धांत की व्याख्या करता है।

प्रेरितों के काम में, हम पिछले दो शीर्षकों की तरह ही तीन अवधारणाएँ देखते हैं: पहचान, समावेशन, और भागीदारी। पहचान, समावेशन, भागीदारी। पवित्र आत्मा की सेवकाई में पहचान और, उल्लेखनीय रूप से, नाटकीय रूप से, पौलुस के धर्मांतरण में।

बपतिस्मा के संस्कार में शामिल होना। यीशु की कहानी के दोहराव में भागीदारी और ल्यूक द्वारा यशायाह के पीड़ित सेवक का उपयोग। पवित्र आत्मा की सेवकाई और पॉल के धर्मांतरण में पहचान।

मसीह के साथ एकता के उपसमूह के रूप में पहचान की अवधारणा। यह पवित्र आत्मा की सेवकाई में और प्रेरितों के काम की पुस्तक में पॉल के चर्च के सबसे बड़े उत्पीड़क से चर्च के महान समर्थक बनने के विवरण में दिखाई देता है। पवित्र आत्मा की सेवकाई में पहचान।

मुक्ति-ऐतिहासिक दृष्टिकोण से, पेंटेकोस्ट प्रेरितों के काम की पुस्तक की नींव रखता है। पतरस, अपने पेंटेकोस्ट उपदेश में, यीशु की सेवकाई को कलीसिया तक पहुँचाता है, क्योंकि वादा किया

गया पवित्र आत्मा लोगों पर उतरता है। अपने सुसमाचार में, लूका यीशु के जन्म में पवित्र आत्मा पर ध्यान केंद्रित करता है, हालाँकि आत्मा दो अन्य प्रमुख स्थानों पर भी दिखाई देती है।

लूका ने पिन्तेकुस्त के बारे में यीशु के पूर्वाभास पर प्रकाश डाला, लूका 11:13, और यीशु के इस आश्वासन पर कि आत्मा शिष्यों को मार्गदर्शन देती है कि जब उनका सामना हो तो उन्हें क्या कहना चाहिए। ये दोनों बातें प्रेरितों के उत्पीड़न का सामना करने के अनुभव का पूर्वाभास कराती हैं। यूहन्ना के सुसमाचार में यीशु के शब्द भी पिन्तेकुस्त के दिन आत्मा के आगमन के लिए तैयार करते हैं।

यीशु कहते हैं कि उनके लिए जाना अच्छा है, ताकि दिलासा देनेवाला आ सके, यूहन्ना 16:7। वह यीशु को लेकर शिष्यों को बताएगा, पद 15। पिन्तेकुस्त के बाद, आत्मा मसीह और प्रेरितों के बीच मध्यस्थता करेगी, मसीह के रहस्योद्घाटन को लेकर उन्हें देगी। पतरस, अपने पिन्तेकुस्त उपदेश में कहता है, इस यीशु को परमेश्वर ने जिलाया, और हम सब इसके गवाह हैं।

इस प्रकार परमेश्वर के दाहिने हाथ से ऊंचा किया गया, और पिता से प्रतिज्ञा की गई पवित्र आत्मा प्राप्त की, उसने यह उंडेला है, जिसे तुम स्वयं देख और सुन रहे हो, प्रेरितों के काम 2:32 और 33। यीशु ने पिन्तेकुस्त के दिन अपने लोगों पर अपनी आत्मा उंडेली, नए करार के वादे की पुराने नियम की भविष्यवाणी को पूरा करते हुए, उद्घरण, मैं अपनी आत्मा तुम्हारे भीतर डालूंगा, उद्घरण बंद करें, यहजेकेल 36:27। लूका पिन्तेकुस्त की बारीकियों को नहीं समझाता है, लेकिन नए नियम का बाकी हिस्सा समझाता है।

रॉबर्ट लेथम ने पेंटेकोस्ट के एक पहलू को समझाया, "आत्मा विश्वासियों के भीतर वास करने और उन्हें मसीह के साथ एकजुट करने के लिए आएगी।" लेथम की पुस्तक, *यूनियन विद क्राइस्ट इन स्क्रिप्चर, हिस्ट्री एंड थियोलॉजी*। इस प्रकार, छुटकारे-ऐतिहासिक शब्दों में, पेंटेकोस्ट आत्मा के वास की सार्वजनिक घोषणा और लोगों को मसीह के साथ एकजुट करने की उनकी सेवकाई की शुरुआत को चिह्नित करता है।

नए नियम का शेष भाग बताता है कि प्रेरितों के काम में पर्दे के पीछे क्या चल रहा है, जो विश्वासियों को मसीह से जोड़ता है। इस प्रकार, पेंटेकोस्ट आत्मा की सेवकाई के लिए एक मुक्ति-ऐतिहासिक शर्त के रूप में कार्य करता है। यह वह क्षण है जब परमेश्वर अपने लोगों के साथ पहचान करता है, फिर से पहचान करता है, उनमें अपनी आत्मा के साथ वास करके, और आत्मा नए नियम के शेष भाग में अनपैक की गई सेवकाई में संलग्न होती है, और उस सेवकाई को मसीह के साथ एकता के रूप में जाना जाता है।

पॉल के धर्म परिवर्तन में पहचान। पॉल के धर्म परिवर्तन, विशेष रूप से प्रेरितों के काम 9 में, और मसीह के साथ एकता सहित उनके पत्रों के धर्मशास्त्र के बीच महत्वपूर्ण संबंध हैं। उदाहरण के लिए, रोमियों 11, जो एक जीवनी है, उनकी धार्मिक सोच में एक स्पष्ट भूमिका निभाता है।

तरसुस का शाऊल ईसाइयों को सताने के लिए दमिश्क की यात्रा करता है। रास्ते में, जब वह जीवित मसीह से मिलता है तो उसकी आँखें बंद हो जाती हैं। शाऊल पूछता है, हे प्रभु, आप कौन हैं?

मैं यीशु हूँ, जिसे तुम सता रहे हो, श्लोक 4 और 5। यहाँ मुख्य बात यीशु की स्वयं की पहचान है। सबसे पहले, वह खुद को ईश्वरीय दर्शन के परमेश्वर के रूप में पहचानता है। दूसरा, यीशु खुद को नवजात कलीसिया के साथ पहचानता है।

तुम मुझे क्यों सता रहे हो? यीशु ने शाऊल से पूछा, जो निस्संदेह वास्तव में हैरान होने लगा था। डेविड पीटरसन, जिनकी प्रेरितों के काम पर महान टिप्पणी मेरी पसंदीदा में से एक है, कहते हैं कि पुनर्जीवित मसीह ने अपने शिष्यों के उत्पीड़न को खुद पर एक हमले के रूप में देखा, स्पष्ट रूप से खुद को चर्च के साथ पहचाना। जो लोग विश्वास से मसीह से जुड़े हैं वे उसी तरह पीड़ित हैं जैसे उसने किया था, और वह उनके संघर्ष में उनके साथ पहचान करता है।

उद्धरण बंद करें। जैसा कि कैंपबेल ने अपनी पुस्तक, पॉल एंड यूनियन विद क्राइस्ट में कहा है, मसीह के साथ एकता के पॉल के धर्मशास्त्र के विकास के लिए मूल उत्प्रेरक को पॉल के शब्दों के रूप में देखा जा सकता है, यीशु के शब्दों के रूप में, क्षमा करें, दमिश्क रोड पर पॉल के लिए। उद्धरण बंद करें।

लूका द्वारा पेंटेकोस्ट का वर्णन और लूका द्वारा पॉल के धर्म परिवर्तन का वर्णन यीशु की अपने लोगों के साथ आत्म-पहचान की एक तस्वीर पेश करता है जिसे पॉल बाद में समझाता है और मसीह के साथ एकता की अवधारणा का उपयोग करके अनुभव करता है। वह मसीह के साथ एकता की अवधारणा का उपयोग करके व्याख्या और विस्तार करता है। ईसाई बपतिस्मा के संस्कार में समावेश।

मसीह के साथ एकता का समावेश पहलू प्रेरितों के काम की पुस्तक में मुख्य रूप से यीशु के नाम पर बपतिस्मा के रूप में दिखाई देता है। बपतिस्मा परमेश्वर के लोगों में प्रवेश के चिह्न के रूप में कार्य करता है, यह चिह्न यहूदियों और अन्यजातियों दोनों के लिए समान रूप से विस्तारित है। अपने पिन्तेकुस्त उपदेश के अंत में, पतरस ने पद 238 में आदेश दिया, पश्चाताप करो और अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु के नाम पर बपतिस्मा लो, और तुम पवित्र आत्मा का उपहार प्राप्त करोगे।

पद 41, जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया, यह दर्शाता है कि पतरस ने पश्चाताप करने और बपतिस्मा लेने की अपनी आज्ञाओं में निहितार्थ के रूप में विश्वास को शामिल किया है। पद 41 उन लोगों के बारे में बात करता है जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया। हम वापस पढ़ते हैं और संकेत देते हैं कि पश्चाताप करने की आज्ञा विश्वासपूर्वक पश्चाताप थी, अर्थात्, पाप से मुड़ने वाला विश्वास, पश्चाताप, मसीह की ओर मुड़ना जैसा कि उसने सुसमाचार में पेश किया है, विश्वास।

यह एक वैध अनुमान है। पद 41, जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया, संकेत करता है कि पतरस ने पश्चाताप करने और बपतिस्मा लेने के आदेशों में निहितार्थ द्वारा विश्वास को शामिल किया है।

लेकिन पतरस जानबूझकर सुसमाचार प्रतिक्रिया को पश्चाताप और बपतिस्मा के रूप में सारांशित करता है।

पश्चाताप का अर्थ है; पश्चाताप का अर्थ है भीड़ द्वारा यह स्वीकार करना कि उन्होंने यीशु को अस्वीकार कर दिया है। पद 23, जबकि बपतिस्मा में विश्वास शामिल है और यह निष्ठा में परिवर्तन के रूप में कार्य करता है, यहूदी भीड़ एक समय यीशु की दुश्मन थी। अब वे उसमें बपतिस्मा ले चुके हैं।

इस प्रकार, बपतिस्मा नई वाचा में वाचा सदस्यता का चिह्न बन जाता है, यीशु में शामिल होने का संकेत और इस प्रकार, उसके लोगों में शामिल होने का संकेत। प्रेरितों के काम में मसीह में विशिष्ट पॉलिन भाषा का अभाव है। सबसे करीबी समानता हम लूका द्वारा यीशु के नाम पर सेवकाई की चर्चा में देखते हैं।

प्रेरितों के काम में कम से कम 12 बार लूका ने इस वाक्यांश का इस्तेमाल प्रेरितों की सेवकाई, खास तौर पर चंगाई और बपतिस्मा के लिए किया है। क्रेग कीनर ने लिखा है कि उनके नाम पर बपतिस्मा लेने वाले लोग यह तय करते थे कि वे किसके अनुयायी होंगे। कीनर के *प्रेरितों के काम, एक व्याख्यात्मक टिप्पणी*।

हम यह निष्कर्ष नहीं निकाल सकते कि लूका का उद्देश्य प्रेरितों के काम में मसीह के साथ एकता को व्यक्त करना था। बपतिस्मा पश्चाताप और विश्वास के साथ-साथ चर्च में शामिल होने की शारीरिक अभिव्यक्ति है। यीशु के नाम पर बपतिस्मा, मसीह के साथ एकता का निर्माण नहीं है, बल्कि स्वामित्व का एक बयान है।

प्रेरितों के काम में बपतिस्मा घोषित करता है, उद्घरण, यह यीशु का बपतिस्मा है, और जो लोग यीशु के नाम पर बपतिस्मा लेते हैं वे उसके अनुयायी हैं। हमें इसे अभी समाप्त करना चाहिए और इसे अपने अगले व्याख्यान में फिर से उठाना चाहिए जब हम प्रेरितों के काम में यीशु की कहानी के दोहराव में भागीदारी और यशायाह के पीड़ित सेवक के ल्यूक के उपयोग के बारे में बात करेंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन की पवित्र आत्मा और मसीह के साथ एकता पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 7 है, मसीह के साथ एकता के लिए नींव, पुराना नियम, और सिनोप्टिक्स।